पाठ 9

# हिन्दी विश्वशांति की भाषा है !

(प्रस्तुत पाठ 'हिन्दी प्रेमी साइजी माकिनो से रत्नावली कौशिक की बातचीत' पर आधारित है।)

जापान में 11 फरवरी सन् 1924 ई0 को जन्मे साइजी माकिनो 36 वर्ष की उम्र में एक बार भारत जो आये तो फिर यहीं के होकर रह गये। आये तो गाँधीजी के सेवाग्राम में स्थित हिन्दुस्तानी तालीमी-संघ में पशुचिकित्सक के रूप में थे पर हिन्दुस्तान का ऐसा रंग चढ़ा कि फिर लौटने का मन ही नहीं हुआ। खादी क्या अपनायी सम्पूर्ण चिन्तन ही गांधीमय हो चला। आइए मिलते हैं- महात्मा गांधी और रवीन्द्रनाथ टैगोर के इस अनन्य भक्त और हिन्दी प्रेमी साइजी माकिनो से -

प्रश्न- भारत आने के पीछे क्या विशेष उद्देश्य था?

उत्तर- सन् 1958 ई0 की बात है। मुझे फुजिई गुरु जी ने वर्धा स्थित सेवाग्राम में आने का आमंत्रण दिया। वे सन् 1931 ई0 से गांधी जी के सहयोगी थे और सेवाग्राम में ही रहते थे। यहाँ एक पशुचिकित्सक की आवश्यकता थी। सोचा कुछ साल के लिए भारत चला जाता हूँ। आज 45 वर्ष होने चले हैं, अब तो भारत ही मेरा घर है। बाद में फुजिई गुरु जी ने ही मुझे रवीन्द्रनाथ टैगोर के पास शान्तिनिकेतन भेजा। शान्तिनिकेतन में गुरुदेव के साथ रहकर जीवन का अर्थ और सोच की धारा बदल गयी।

प्रश्न- हिन्दी सीखने और पढ़ने का सिलसिला कैसे शुरू हुआ?

उत्तर-अप्रैल सन् 1959 ई0 में पंढरपुर सर्वोदय सम्मेलन के बाद विनोबा जी ने मुझसे कहा कि मैं सेवाग्राम लौटकर हिन्दी सीखना प्रारम्भ करूँ और मंैने हिन्दी सीखना आरम्भ कर दिया। उन दिनों सेवाग्राम के प्रेसीडेन्ट आर्यनायकम् हुआ करते थे। उन्होंने आगरा के एक अच्छे हिन्दी शिक्षक को मेरे पास भेजा। मुझ जैसे विदेशी के लिए हिन्दी सिखाना बहुत मुश्किल काम था। मुझे खराब उच्चारण के लिए बहुत डाँट पड़ती थी। पर धीरे-धीरे मैंने हिन्दी बोलना और पढ़ना सीख लिया। मेरी पत्नी 'युकिको' को जिसे सेवाग्राम में 'सुजाता' नाम दिया गया था, हिन्दी सीखने के लिए 'वर्धा राष्ट्रभाषा प्रचार समिति' में भेज दिया गया। छह महीने तक हॉस्टल में रहकर हिन्दी पढ़ती रही। शायद जापानियों में वही हिन्दी की सर्वप्रथम छात्रा रही हंै।

प्रश्न- सेवाग्राम में रहकर तो आप चरखा चलाना भी सीख गये होंगे ?

उत्तर- सेवाग्राम में गोशाला में इतना काम रहता था कि चरखे की तरफ ध्यान ही नहीं जाता था। आज मैं चरखे के महत्त्व को समझ सकता हूँ बल्कि आज के युग में फिर से चरखे के प्रचार और प्रशिक्षण की आवश्यकता महसूस करता हूँ।

प्रश्न- गुरुदेव टैगोर का साथ और शान्तिनिकेतन का वातावरण आपको कैसा लगा ?

उत्तर- गुरुदेव के व्यक्तित्व और शान्तिनिकेतन के परिसर के प्राकृतिक सौन्दर्य ने मुझे इतना आकर्षित किया कि मेरा कहीं जाने का मन ही नहीं करता था। हिन्दी-भवन के सामने वाले छात्रावास में रहकर केवल पढ़ता रहता था। शांतिनिकेतन का परिवेश इतना शांत था कि पुस्तकालय में बैठे हुए आप घड़ी की आवाज स्पष्ट सुन सकते थे। मैंने भी पवित्र भूमि शांतिनिकेतन को अपनी जीवन-साधना का आधार बना लिया। समझ नहीं आता कि गुरुदेव के व्यक्तित्व ने वातावरण को इतना सुन्दर बना दिया है या इतने शांत वातावरण ने ही गुरुदेव जैसे महापुरुष की रचना की। जो भी हो-- जमाना कितना भी बदल जाए पर शांतिनिकेतन की भूमि में विश्व की तमाम संस्कृतियों को समाये रखने की

क्षमता हमेशा रहेगी। यहाँ की प्रकृति स्वयं यहाँ की पुरानी कहानियाँ सुनाती रहेगी। इसी भूमि में मुझे पं0 हजारीप्रसाद द्विवेदी जैसे महानुभावों से शिक्षा और प्रेरणा पाने का अवसर मिला।

प्रश्न- ये बताइए कि आपकी हिन्दी-यात्रा की शुरुआत कैसे हुई ?

उत्तर- सच तो यह है कि हिन्दी की कृपा से मेरा जीवन चल पड़ा। वरना रोजमर्रा की जरूरतें पूरी करना मुश्किल हो जाता। उन दिनों ग्वालियर में बिड़ला फैक्ट्री में जापानी तकनीक से एक फैक्ट्री लगायी गयी। जापानी इंजीनियरों को हिन्दी नहीं आती थी और फैक्ट्री में काम करने वाले भारतीयों को जापानी। मुझे बुलाया गया और एक दुभाषिये के रूप में मैंने चार सौ रुपये महीने पर काम करना शुरू कर दिया। यहाँ मैंने चार साल काम किया और हिन्दी में बहुत से लेख लिखे जो विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए।

प्रश्न- क्या जापानी और हिन्दी साहित्य में कोई समानता है ?

उत्तर- दोनों का लोकसाहित्य लगभग समान है। मणिपुर और राजस्थान की लोककथाएँ जापान की लोककथाओं जैसी ही हैं। इसका कारण है कि जापान की संस्कृति चीन और भारत की मिश्रित संस्कृति है। मैं भारत को दादा और चीन को पिता मानता हूँ। हिन्दी विश्व-शांति की भाषा बने और मैं जीवनपर्यन्त इससे जुड़ा रहूँ, यह मेरी कामना है।

प्रश्न- जापान में हिन्दी की क्या स्थिति है ?

उत्तर- जापान में भारतीयों और हिन्दी भाषा का बहुत अधिक सम्मान है। जापान की दो नेशनल यूनिवर्सिटी ओसाका और टोकियो में बी0 ए0 और एम0 ए0 स्तर पर हिन्दी पढ़ाई जाती है। भारत के लिए यह गौरव का विषय होना चाहिए। यहाँ के लोग भी जापानी सीख रहें हैं। पहले यहाँ सिर्फ सर्टिफिकेट डिप्लोमा कोर्स था अब बी0 ए0 कोर्स भी है और हर साल बहुत लोग बी0 ए0 की परीक्षा में बैठते हैं। मेरा यह मानना है कि भाषा देशांे को भावना के स्तर पर जोड़ती है। जापानी भाषा में संस्कृत के शब्द भरे पड़े हैं। इन दिनों

बंग्ला भाषा भी जापान में जोर पकड़ रही है, क्योंकि कलकत्ता (कोलकाता) एशिया का दरवाजा है। एक समय में सबसे ज्यादा जापानी कलकत्ता में ही रहते थे। अब तो पूरे देश में बिखर गये हैं।

प्रश्न- जापान में और कौन विशिष्ट लोग हिन्दी सेवा में रत हैं ?

उत्तर- प्रो0 दोइ ने टोकियो विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग की स्थापना की। वे बहुत अच्छा काम कर रहे हंै। प्रो0 तोषियोतनाका ने भीष्म साहनी के 'तमस' का जापानी में अनुवाद किया है। प्रो0 कोगा ने 'जापानी-हिन्दी कोश' की रचना की है। उन्हांेने 'गांधी जी की आत्मकथा' का जापानी में अनुवाद भी किया है। इसके लिए उन्होंने गुजराती भी सीखी। प्रो0 मोजोकामी हरसाल हिन्दी का एक नाटक तैयार करते हैं और उसका मंचन करने के लिए भारत आते हैं। प्रो0 साकाता ने भी हिन्दी साहित्य पर बहुत काम किया है।

प्रश्न- आपने भी तो हिन्दी की कुछ महत्त्वपूर्ण पुस्तकों का जापानी में अनुवाद किया है ?

उत्तर- हाँ मुझे, भगवतीचरण वर्मा का उपन्यास 'चित्रलेखा' बहुत पसंद आया, इसलिए मैंने उसका जापानी में अनुवाद किया।

प्रश्न- इसके अलावा आप ने और भी कई पुस्तकें लिखी हैं?

उत्तर- 'टैगोर और गांधी: एक तुलनात्मक अध्ययन', 'जापानी आत्मा की खोज', 'भारत में चालीस साल: पुनर्विचार और सिंहावलोकन' जैसी कुछ पुस्तकें लिखीं हैं। अभी एक पुस्तक की पाण्डुलिपि तैयार हुई है, 'भारत वर्ष में 45 साल मेरी हिन्दी यात्रा'।

प्रश्न- आज की नयी पीढ़ी जो पश्चिम सभ्यता के पीछे भाग रही है। आप उनसे क्या कहना चाहेंगे?

उत्तर- नयी पीढ़ी अपनी सभ्यता संस्कृति से दूर होती जा रही है, यह बड़े दु:ख की बात है। अपने देश को आगे बढ़ाने के लिए अपनी भाषा और संस्कृति ही काम आती है।

प्रश्न- लिखने-पढ़ने के अतिरिक्त आपके और कौन-से शौक हैं ?

उत्तर- मुझे जापानी बगीचा लगाना बहुत अधिक पसंद है। जहाँ जाता हूँ, फूल-पत्ती और पेड़ों के साथ दोस्ती कर लेता हूँ। जगह-जगह पेड़ लगाता हूँ, कुछ लोग जापानी फूल लगाने की कला भी सीखने आते हैं।

प्रश्न- अंत में कोई ऐसी बात जो आप अपने पाठकों से कहना चाहेंगे?

उत्तर- मुझे हमेशा इस बात का खेद रहता है कि जितना भारत माता का नमक खाया उतनी उसकी सेवा नहीं की। भारत बहुत बड़ा देश है। उसका दिल भी बहुत बड़ा है। दुनिया का कोई देश उसका मुकाबला नहीं कर सकता।

**जापान में 11 फरवरी सन् 1924 ई0 को जन्मे साइजी माकिनो 'हिन्दीभवन' द्वारा 'हिन्दी रत्न' से सम्मानित किये जा चुके हैं। आपने हिन्दी में कई पुस्तकें लिखी हैं। मूलतः आप पशु चिकित्सक थे, बाद में कुछ समय के लिए आपने दुभाषिये का भी कार्य किया।**

शब्दार्थ

हॉस्टल = छात्रावास। परिवेश = वातावरण। फैक्ट्री = कारखाना। दुभाषिया = दो भाषाओं का आपसी अनुवाद करने की योग्यता रखने वाला। जीवन-पर्यन्त = आजीवन।

## प्रश्न अभ्यास

### कुछ करने को

1. साक्षात्कार, हिन्दी गद्य की एक लघु विधा है। इसमंे किसी क्षेत्र में विशेष उपलब्धि पाये हुए व्यक्ति से बातचीत करके उसके सम्बन्ध में आवश्यक जानकारी पाठक या श्रोता का दी जाती हैं। साक्षात्कार लेने के लिए जरूरी होता है प्रश्न (सवाल) बनाना। यदि आप को आपके पसंद के व्यक्ति का साक्षात्कार लेना हो तो जरूरी होगा कि पहले आप उनसे पूछने के लिए सवाल तैयार करें। सोचिए और लिखिए-
-: आप किस व्यक्ति का साक्षात्कार लेना चाहते है ?
-: उनसे आप कौन-कौन से प्रश्न पूछेंगे ? उनकी एक सूची बनाइए।
2.अपने क्षेत्र के किसी प्रसिद्ध व्यक्ति का साक्षात्कार लेकर कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।
3.'14 सितम्बर' प्रतिवर्ष 'हिन्दी-दिवस' के रूप में मनाया जाता है। पता लगाइए कि हिन्दी-दिवस 14 सितम्बर को ही क्यों मनाया जाता है।

### विचार और कल्पना

1. यदि पेड़-पौधे और जीव-जन्तु भी भाषा बोलने में सक्षम होते तो-

- वे हमसे क्या-क्या चिन्ताएं बताते ?

- इसका वातावरण पर क्या प्रभाव पड़ता ?

2. हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा है किन्तु देश के अनेक प्रदेशों मंे इसके अतिरिक्त प्रादेशिक भाषाएँ भी बोली जाती हैं। नीचे लिखी गयी भाषाओं का उनके प्रदेशों से मिलान कीजिए-

| | |
|---|---|
| मराठी | आन्ध्रप्रदेश |
| मलयालम | तमिलनाडु |
| कन्नड़ | केरल |
| तेलगू | महाराष्ट्र |
| तमिल | कर्नाटक |

**बातचीत से**

1. साइजी माकिनो भारत कब और किस कार्य के लिए आये ?

2. साइजी माकिनो ने शांतिनिकेतन की क्या विशेषताएँ बतायी हैं ?

3. साइजी माकिनो को ग्वालियर की बिड़ला फैक्ट्री में क्यों जाना पड़ा ?

4. साइजी की क्या कामना है ?

5. जापान में हिन्दी की क्या स्थिति है ?

6. साइजी ने पाठकों को कौन-सा संदेश देना चाहा है ?

**भाषा की बात**

1. भाषा के सौन्दर्य से सम्बन्धित निम्नलिखित वाक्यों को ध्यान से पढ़िए-

(क) समझ नहीं आता कि गुरुदेव के व्यक्तित्व ने वातावरण को इतना सुंदर बना दिया है या इतने शांत वातावरण ने ही गुरुदेव जैसे महापुरुष की रचना की है।

(ख) समझ नहीं आता कि आपकी महानता ने आपको इतना सुंदर बना दिया है या आपकी सुन्दरता ने आपको महान बना दिया है।

-इसी प्रकार से किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान की दो विशेषताओं को लेकर दो वाक्यों की रचना कीजिए।

2. 'शांति' में 'निकेतन' जोड़कर 'शांतिनिकेतन' बना है। इसी प्रकार 'शांति' में अन्य शब्दों को जोड़कर तीन नये शब्द बनाइए।

3. जिस शब्द से क्रिया की विशेषता प्रकट हो उसे क्रियाविशेषण कहते हैं, जैसे-

(क) वह धीरे-धीरे टहलता है।

(ख) पी0 टी0 उषा तेज दौड़ती हंै।

यहाँ सभी रेखांकित शब्द क्रियाविशेषण हैं क्योंकि पहले वाक्य में 'धीरे-धीरे' क्रिया 'टहलना' की विशेषता और दूसरे वाक्य में 'तेज' शब्द 'दौड़ने' क्रिया की विशेषता बता रहा है। इस प्रकार पाठ में आये किन्हीं चार क्रियाविशेषण (शब्दों) को छाँटकर सम्बन्धित क्रियाओं के साथ लिखिए।

**इसे भी जानें**

एक भाषा को दूसरी भाषा में प्रस्तुत करना अनुवाद कहलाता है। जिस भाषा से अनुवाद किया जाता है, उसे 'स्रोत भाषा' और जिसमें अनुवाद करते हैं, उसे 'लक्ष्य भाषा' कहते हैं। अनुवाद करने वाला अनुवादक होता है। एक अच्छे अनुवादक को स्रोत और लक्ष्य भाषा की जानकारी होने के साथ-साथ दोनों देशों की प्रकृति, सांस्कृतिक अवस्था एवं लोकजीवन की भी अच्छी समझ होनी चाहिए।